समाजीकरण के स्तर
(Stages of Socialization)

सामाजिक वैज्ञानिकों ने समाजीकरण के स्तरों को अपने-अपने ढंग से स्पष्ट करने का प्रयास किए है। एक महान समाजशास्त्री एच. एम. जॉनसन ने इसके चार स्तरों का उल्लेख किया है, जो एक व्यक्ति के जीवन में समाजीकरण की व्याख्या करता है। इसका वर्णन निम्नलिखित है-

(1) मौखिक अवस्था (Oral Stage):

मौखिक अवस्था समाजीकरण का पहला स्तर है। यह स्तर बच्चे के जन्म के साथ आरम्भ होता है तथा एक वर्ष तक बना रहता है। इसमें बच्चा प्रारम्भ में परिवार के किसी सदस्य को नहीं पहचानता और न परिवार के किसी सदस्य से उसकी अन्तःक्रिया होता है। वह अपनी मौलिक अवस्था 'भूख' की पूर्ति चाहता है। इस रूप में यह केवल अपने भोजन एजेन्ट को पहचानता है। यह भोजन एजेन्ट प्रायः माँ होती है। इस स्तर में बच्चा परिवार के लिए केवल मात्र खिलौना के रूप में होता है।

(2) शौच अवस्था :-

शौच अवस्था समाजीकरण का दूसरा स्तर है। यह स्तर बच्चे के जन्म के एक वर्ष की आयु के बाद प्रारम्भ होता है तथा प्रायः चार वर्ष तक होता है। इसी स्तर में बच्चा शौच प्रशिक्षण प्राप्त करता है। माँ से अन्तःक्रिया प्रारम्भ होती है, माँ से प्यार पाता है और फिर माँ से प्यार करता है। फिर परिवार के अन्य सदस्यों से अन्तःक्रिया प्रारम्भ करता है। इसी स्तर में बच्चों में भाषा ज्ञान प्रारम्भ होता है व बोलना सीखता है। इसी स्तर में बच्चा पारिवारिक नियमों से अवगत होता है। फिर परिवार से संबंध बनाना प्रारम्भ कर देता है।

(3) ऑडिपल और लेटेन्सी स्तर! - समाजीकरण

तीसरा स्तर ऑडिपल और लॉटेन्सी के नाम से जाना जाता है। यह स्तर को दो उपस्तरों में बाँटा गया है। प्रथम ऑडिपल और दूसरा लाटेन्सी स्तर। ऑडिपल स्तर चार वर्ष के बाद आरम्भ होता है तथा पाँचवें वर्ष तक बना रहता है। इस स्तर में बच्चा ~~है बच्चा~~ माता-पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ अन्तःक्रिया करता है तथा व्यवहार का ढंग सीखता है।

लॉटेन्सी स्तर पाँच वर्ष की आयु के बाद प्रारम्भ होता है तथा बारह-तेरह वर्ष तक बना रहता है। इस स्तर में बच्चों का अन्तःक्रिया का दायरा बढ़ता है। परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त पड़ोस, खेल-समूह तथा स्कूल के सम्पर्क में आता है। जी॰ स्च॰ मीड॰ का कहना है कि बच्चे खेलकूद समूह में ही अपने विभिन्न खेलों द्वारा व्यस्क भूमिका से परिचित होते हैं और उसे अपनाते हैं।

(4) किशोरावस्था :—

समाजीकरण का चौथा स्तर किशोरावस्था के नाम से जाना जाता है। यह स्तर तेरह वर्ष की आयु के बाद प्रारम्भ होता है तथा युवावस्था तक बना रहता है। इस स्तर में व्यक्ति की भागीदारी पूरे समाज के साथ होती है। इसी स्तर में व्यक्ति परिवार, पड़ोस मित्र-मंडली, स्कूल-कालेज, नौकरी का क्षेत्र आदि के सम्पर्क में आता है। जानसन का मानना है कि इस स्तर में किशोर के समाजीकरण में चुना तनाव 'रूपी समस्या का विकास होता है। इस आयु में युवक या युवतियाँ पूर्ण आजादी चाहती हैं। यदि उन्हें पूर्ण आजादी दे दी जाए तो व्यक्तित्व विकास में बाधा उत्पन्न हो सकती है। यदि विशेष दबाव में रखा जाए, तो प्रतिक्रिया का स्तर बुरा हो सकता है।

इसलिए इस स्तर में विशेष सावधानी के साथ समाजीकरण की जरूरत है। इसी स्तर में व्यक्ति का विवाह होता है, पत्नी, पति, दामाद, बहू व अन्य संबंधी के रूप में प्रस्थिति व भूमिका ग्रहण करती है। फिर माता या पिता बनता है। इस रूप में अपने बच्चों के समाजीकरण में लग जाता है, यानि यहाँ व्यक्ति समाजीकरण का साधन भी बनता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया किशोरावस्था के बाद समाप्त नहीं हो जाती है। यह जीवनपर्यन्त किसी न किसी रूप में क्रियाशील रहती है, इसलिए एल. ब्रूम और पी. एच. सेल्जनिक ने लिखा है — "समाजीकरण आजन्म चलनेवाली प्रक्रिया है।"

परन्तु उपर्युक्त चार स्तर व्यक्तित्व के निर्माण दृष्टिकोण से विशेष महत्त्वपूर्ण है। इसके बाद की प्रक्रियाएँ सरल हो जाती है। समाजीकरण के प्रत्येक स्तर पर परिवार की भूमिका अद्वितीय है।

जॉनसन के शब्दों में,

"इन सभी स्तरों पर, लेकिन खास तौर पर प्रथम तीन में परिवार समाजीकरण करने वाला मुख्य समूह है।"

उपरोक्त विवेचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति के समाजीकरण में उपरोक्त चार अवस्था के अलावा जीवनभर समाजीकरण की प्रक्रिया चलती रहती है परन्तु ये चारों समाजीकरण के स्तर जटिल है उसके बाद की अवस्था कुछ हद तक सरल हो जाती है।